पुरातत्व संस्थान

पंडित दीनदयाल उपाध्याय परिसर

संस्कृति मंत्रालय

विवरणिका 2027 – पुरातात्विक स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDA)

अवलोकन (Overview)

देश में पुरातात्विक अध्ययनों की उन्नति के लिए एक विशिष्ट संस्थान का विचार वर्ष 1944 में परिकल्पित किया गया था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) के तत्वावधान में पुरातात्विक शिक्षा और अनुसंधान को औपचारिक रूप देने के प्रयासों की शुरुआत थी। इसने युवाओं को उत्खनन के विज्ञान में प्रशिक्षित करने और मैदानी जीवन (फील्ड लाइफ) की कठोरताओं से निपटने के लिए उत्खनन प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन का रूप लिया। 1959 में, विषय के सभी क्षेत्रों में पुरातत्वविदों को प्रशिक्षित करने के लिए एक संरचित कार्यक्रम की दृष्टि से लैस होकर, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत 'स्कूल ऑफ आर्कियोलॉजी' (School of Archaeology) की औपचारिक स्थापना की गई। इस संस्थान का उद्देश्य भारत में पुरातात्विक अध्ययनों को संस्थागत बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम उठाना था। प्रारंभ में, ध्यान मूलभूत प्रशिक्षण, क्षेत्र कार्य (फील्डवर्क) और भौतिक संस्कृति के माध्यम से भारतीय इतिहास के अध्ययन पर केंद्रित था। स्कूल ने पुरातत्व में एक वर्ष का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम पेश किया।

पुरातात्विक अनुसंधान के बढ़ते महत्व और दायरे को पहचानते हुए, 1985 में स्कूल ऑफ आर्कियोलॉजी को 'पुरातत्व संस्थान' (Institute of Archaeology) के रूप में उन्नत (अपग्रेड) किया गया। यह 1983 की आर.एन. मिर्धा रिपोर्ट के अनुरूप भी था, जिसने पुरातत्व में करियर के लिए छात्रों के शिक्षण और प्रशिक्षण के अलावा पुरातात्विक अनुसंधान पर बल दिया था। इस नई स्थिति ने संस्थान को पुरातत्व और विरासत प्रबंधन में उन्नत कार्यक्रम पेश करने और अधिक व्यापक अनुसंधान परियोजनाओं में संलग्न होने की अनुमति दी। तत्कालीन स्कूल ऑफ आर्कियोलॉजी द्वारा दिया जाने वाला पुरातात्विक स्नातकोत्तर डिप्लोमा अब व्यापक शैक्षणिक और प्रशिक्षण अनुसूची के साथ दो वर्षीय कार्यक्रम बन गया।

स्कूल ऑफ आर्कियोलॉजी ने अपनी स्थापना के समय से 11 जनपथ से कार्य किया। पुरातत्व संस्थान में उन्नत होने के बाद, इसने 24 तिलक मार्ग स्थित लुटियंस दिल्ली की भव्य सफेद इमारत से कार्य

करना शुरू किया। अक्टूबर 2005 में, पुरातत्व संस्थान पुरानी दिल्ली में लाल किला परिसर के भीतर एक औपनिवेशिक भवन में स्थानांतरित हो गया। इसके बाद, 2019 में पुरातत्व संस्थान पंडित दीनदयाल उपाध्याय परिसर, नॉलेज पार्क II, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में स्थानांतरित हो गया। इस नए 25 एकड़ के परिसर का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। 2024 में, अधिक व्यावहारिक प्रशिक्षण (hands-on training) की आवश्यकता के साथ पुनर्गठित करने के लिए पाठ्यक्रम को फिर से तैयार और संशोधित किया गया। वर्तमान पाठ्यक्रम संरचना फिर से एक वर्ष की अवधि की है और शैक्षणिक सत्र अब जनवरी महीने से शुरू होने वाले कैलेंडर वर्ष के अनुरूप है।

शैक्षणिक कार्यक्रम (Academic Programme)

पुरातत्व संस्थान पुरातात्विक स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post-Graduate Diploma in Archaeology) में एक वर्ष का पाठ्यक्रम प्रदान करता है। शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी और हिंदी दोनों है। शैक्षणिक सत्र जनवरी से प्रारंभ होगा।

संकाय (Faculty)

संस्थान हमारे छात्रों को व्याख्यान देने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के विषय विशेषज्ञों और विश्वविद्यालयों, कॉलेजों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षाविदों को आमंत्रित करता है।

सुविधाएं और संसाधन (Facilities and Resources)

पुस्तकालय (Library)

संस्थान का पुस्तकालय शैक्षणिक सह प्रशासनिक ब्लॉक के भूतल पर बी-विंग में स्थित है। यहाँ 20,000 से अधिक पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त, PGDA के छात्रों द्वारा जमा किए गए शोध प्रबंध (dissertations) भी शैक्षणिक सत्रों के अनुसार रखे गए हैं और छात्रों के परामर्श के लिए उपलब्ध हैं। परिसर में एक डिजिटल लाइब्रेरी बनाने की योजना है।

प्रयोगशालाएं (Labs)

संस्थान में एक समर्पित कंप्यूटर लैब है जो आवश्यकतानुसार छात्रों के उपयोग के लिए उपलब्ध है। सभी उपकरण वाई-फाई (Wi-Fi) से जुड़े हैं। इसके अलावा, इमारत की दूसरी मंजिल पर एक साइंस लैब मौजूद है। यहाँ विभिन्न कलाकृतियों (artefacts) का संरक्षण और परिरक्षण किया जाता है और छात्रों को प्रशिक्षण दिया जाता है। लैब में विभिन्न श्रेणियों की कलाकृतियों – जैविक और अजैविक दोनों – के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए पर्याप्त संख्या में उच्च-स्तरीय मशीनें भी हैं।

सामुदायिक केंद्र (Community Centre)

दो मंजिला अलग इमारत में स्थित सामुदायिक केंद्र के भूतल पर एक बहुउद्देशीय हॉल है। भवन की पहली मंजिल पर एक जिम्नेजियम (व्यायामशाला) है जो सभी छात्रों और अधिकारियों के उपयोग के लिए विभिन्न मशीनों से सुसज्जित है। इसके अतिरिक्त, छात्रों के उपयोग के लिए क्रिकेट, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेबल-टेनिस, कैरम, शतरंज आदि जैसे बाहरी और इनडोर खेलों की किट भी उपलब्ध हैं।

योग्यता (Qualifications)

प्रवेश के लिए शैक्षणिक योग्यता प्राचीन भारतीय इतिहास / संस्कृति / पुरातत्व में मास्टर डिग्री (Master's Degree) है। कुल मिलाकर न्यूनतम अर्हता अंक 55% है, जिसमें अनुसूचित जाति (SC)/अनुसूचित जनजाति (ST) और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के उम्मीदवारों तथा केंद्र/राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों के सेवारत उम्मीदवारों के मामले में 5% की छूट देय है।

सीटों की संख्या (Number of Seats)

PGDA पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रतिवर्ष 15 सीटों के लिए आयोजित किया जाता है। राज्य सरकारों, संग्रहालयों, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों आदि के सेवारत उम्मीदवारों (सेवारत पुरातत्वविदों) के मामले में आवेदन उचित माध्यम (proper channel) से प्रशासक (IoA) को भेजा जाना चाहिए।

आरक्षण (Reservation)

SC/ST/OBC/EWS आदि के लिए आरक्षण समय-समय पर जारी भारत सरकार के नियमों के अनुसार प्रदान किया जाता है।

आयु सीमा (Age Limit)

नए उम्मीदवारों के लिए अधिकतम आयु सीमा 25 वर्ष है। SC/ST उम्मीदवारों के लिए ऊपरी आयु सीमा में 5 वर्ष, OBC (नॉन-क्रीमी लेयर) उम्मीदवारों के लिए 3 वर्ष की छूट देय है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सेवारत उम्मीदवारों, या राज्य पुरातत्व विभागों/संग्रहालयों/विश्वविद्यालयों या पुरातत्व विषय पढ़ाने वाले कॉलेजों द्वारा प्रायोजित उम्मीदवारों के लिए कोई आयु सीमा नहीं है। सार्क (SAARC) और बिम्सटेक (BIMSTEC) देशों के उम्मीदवार विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) के दिशानिर्देशों द्वारा शासित होंगे।

प्रवेश (Admission)

PGDA पाठ्यक्रम में छात्रों के प्रत्येक नए बैच के प्रवेश के लिए, प्रवेश प्रक्रिया अक्टूबर महीने में शुरू की जाती है। एम्प्लॉयमेंट न्यूज (रोजगार समाचार) में एक संकेतक विज्ञापन प्रकाशित किया जाता है, जिसका विवरण पुरातत्व संस्थान की वेबसाइट पर दिया जाता है। इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वेबसाइट पर भी प्रदर्शित किया जाता है। व्यापक प्रचार के लिए लिंक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा किया जाता है।

आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि वेबसाइट पर लिंक सक्रिय होने से 15 दिन यानी 31/10/2026 को रात 11:59 बजे तक है। यदि इस अवधि के दौरान कोई तकनीकी समस्या उत्पन्न होती है, तो आवेदन की अंतिम तिथि आनुपातिक रूप से बढ़ा दी जाएगी। आवेदन का तरीका विशेष रूप से केवल ऑनलाइन होगा। सेवारत उम्मीदवारों को अपना आवेदन उचित माध्यम से प्रशासक, IoA को जमा करना अनिवार्य है।

चयन (Selection)

PGDA पाठ्यक्रम के लिए चयन प्रक्रिया में एक लिखित परीक्षा (हिंदी या अंग्रेजी) और उसके बाद शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों का व्यक्तिगत साक्षात्कार शामिल है। यह नवंबर महीने में आयोजित किया जाएगा। पूरी प्रक्रिया के लिए अंक 100 में से होंगे - लिखित और व्यक्तिगत साक्षात्कार के बीच अंकों का अनुपात 70:30 होगा। लिखित परीक्षा बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (MCQs), लघु टिप्पणियों और प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व पर एक निबंध प्रकार के प्रश्न का संयोजन होगी।

समय (Time)

प्रश्न पत्र को 2 घंटे की अवधि के भीतर हल करना होगा।

व्यक्तिगत साक्षात्कार (Personal Interview)

व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिए लिखित परीक्षा में उनके प्रदर्शन के आधार पर उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट किया जाएगा। शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों की सूची वेबसाइट और नोटिस बोर्ड के माध्यम से सभी की जानकारी के लिए सार्वजनिक की जाएगी। लिखित परीक्षा से शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों का व्यक्तिगत साक्षात्कार लिखित परीक्षा का परिणाम घोषित होने के अगले दिन आयोजित किया जाएगा। अंतिम परिणाम की घोषणा दिसंबर माह में होगी।

छात्रवृत्ति / वजीफा (Stipend)

संस्थान पाठ्यक्रम में शामिल होने वाले नए छात्रों को ₹8,000/- प्रति माह का 15 वजीफा प्रदान करता है। इसके अलावा, संस्थान देश के विभिन्न हिस्सों के दौरों के दौरान छात्रों के यात्रा व्यय को भी वहन करता है। सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदन के अधीन, वजीफे में वृद्धि हेतु समीक्षा की जा रही है।

आवास (Accommodation)

नॉलेज पार्क II, ग्रेटर नोएडा में विशाल पंडित दीनदयाल उपाध्याय परिसर के भीतर छात्रों को ट्विन शेयरिंग के आधार पर छात्रावास की सुविधा प्रदान की जाती है। कमरों में अटैच वॉशरूम और एक छोटा बरामदा है। हॉस्टल में रहने वालों के लिए रसोई और भोजन कक्ष उपलब्ध है। भोजन का प्रबंध संस्थान द्वारा किया जाता है, लेकिन छात्रों को ₹2,100/- प्रति माह का निश्चित योगदान देना होगा। भुगतान किए जाने वाले मासिक वजीफे में कोई परिवर्तन होने पर इस राशि में संशोधन हो सकता है। फील्ड सेशन के दौरान छात्र अपनी मेस खुद चलाएंगे। हॉस्टल में 24x7 सुरक्षा गार्ड मौजूद रहते हैं। छात्र के वजीफे से ₹250/- प्रति माह का कमरा शुल्क काटा जाता है, जिसमें भुगतान किए जाने वाले मासिक वजीफे में कोई परिवर्तन होने पर संशोधन भी हो सकता है।

उपस्थिति (Attendance)

छात्रों की न्यूनतम 85% उपस्थिति अनिवार्य है, जिसमें प्रशिक्षण शिविर और अध्ययन दौरे शामिल हैं। आवश्यक उपस्थिति से कम वाले छात्र डिप्लोमा प्रदान किए जाने के पात्र नहीं होंगे। शैक्षणिक सत्र के दौरान छात्रों के लिए कोई अवकाश अनुमेय नहीं है। अवकाश केवल अप्रत्याशित आपातकालीन परिस्थितियों में ही स्वीकार्य है जिसके लिए संस्थान के निदेशक या उनके प्रतिनिधि की पूर्व अनुमति आवश्यक है। 85% से कम उपस्थिति के परिणाम स्वरूप छात्र को पाठ्यक्रम से निष्कासित (rusticate) कर दिया जाएगा।

घोषणा (Declaration)

PGDA पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय, छात्र को एक श्योरिटी बॉन्ड (surety bond) पर हस्ताक्षर करके जमा करना होगा। अन्य बातों के अलावा, बॉन्ड के माध्यम से छात्र निम्नलिखित की घोषणा करेंगे और प्रस्तुत करेंगे:

1. क्या दूरस्थ या अन्य माध्यम से कोई अतिरिक्त शैक्षणिक पाठ्यक्रम कर रहे हैं – मास्टर डिग्री; एम.फिल., पीएच.डी., आदि।
2. क्या उन्हें कोई फेलोशिप / छात्रवृत्ति आदि प्रदान की गई है और वे प्राप्तकर्ता हैं।

3. अन्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों या नौकरियों के लिए आवेदन की सूचना।
4. यदि कोई छात्र किसी भी कारण से सत्र के मध्य में पाठ्यक्रम छोड़ता है, तो उसे तब तक प्राप्त वजीफा और संस्थान द्वारा उठाए गए अन्य वित्तीय दायित्वों जैसे ट्रेन टिकट, दौरों पर भुगतान किए गए आवास आदि की प्रतिपूर्ति करनी होगी।

शैक्षणिक कैलेंडर (Academic Calendar)

शैक्षणिक सत्र 1 जनवरी से ओरिएंटेशन कार्यक्रम के साथ शुरू होगा। पाठ्यक्रम की कुल अवधि एक वर्ष होगी। इसमें सैद्धांतिक पाठ, दो महीने का लंबा उत्खनन और अन्वेषण (Excavation and Exploration) प्रशिक्षण शिविर, अन्य क्षेत्र कार्य, और छात्रों द्वारा शोध प्रबंध (Dissertation) को पूरा करना और जमा करना शामिल होगा।

पाठ्यक्रम (Syllabus)

यह केवल एक संकेतक सूची है। छात्रों के 11 विषय पत्र होंगे जिनमें 8 सैद्धांतिक पत्र, उत्खनन में एक व्यावहारिक प्रशिक्षण, एक शोध प्रबंध और एक मौखिक परीक्षा (viva-voce) शामिल हैं।

प्रश्नपत्र 1: पुरातत्व: इतिहास, क्षेत्र विधियां और सिद्धांत (Archaeology: History, Field Methods & Theory)

- **इकाई 1**
    - पुरातत्व का परिचय – परिभाषाएं, कार्यक्षेत्र, शब्दावली
    - पुरातत्व का विकास – पुराविदशास्त्र (antiquarianism) से वैज्ञानिक अनुशासन तक
    - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का इतिहास; भारतीय पुरातत्वविद
    - पुरातत्व और अन्य अनुशासन
    - पुरातत्व में सैद्धांतिक नींव – प्रक्रियात्मक (Processual); उत्तर-प्रक्रियात्मक (Post-processual); नया पुरातत्व (New archaeology), आदि।
- **इकाई 2**
    - स्थल निर्माण प्रक्रियाएं (Site formation processes)
    - अन्वेषण – क्षेत्र सर्वेक्षण विधियां – पारंपरिक और वैज्ञानिक
    - केस स्टडी – प्रागैतिहासिक और आद्य-ऐतिहासिक; ऐतिहासिक; मध्यकालीन
    - उत्खनन तकनीकें
    - जलमग्न पुरातत्व (Underwater archaeology)
- **इकाई 3**

- प्राकृतिक विज्ञान और पुरातत्व (मानव विज्ञान; पुरावनस्पति विज्ञान; पुराप्राणी विज्ञान; अस्थि विज्ञान)
- पृथ्वी विज्ञान और पुरातत्व (पुरा-पर्यावरण पुनर्निर्माण; भूविज्ञान; भू-आकृति विज्ञान)
- मात्रात्मक विधियां और सूचना विज्ञान
- पुरातात्विक रसायन विज्ञान
- पुरा-धातु विज्ञान (Archaeo-Metallurgy)

- **इकाई 4**
  - वानस्पतिक, प्राणीशास्त्रीय और अन्य गैर-कलाकृति अवशेषों की पुनर्प्राप्ति, नमूनाकरण और विश्लेषण
  - सापेक्ष तिथि निर्धारण (Relative dating)
  - निरपेक्ष तिथि निर्धारण (Absolute dating)
- **इकाई 5**
  - रिकॉर्डिंग, दस्तावेज़ीकरण, पुनर्निर्माण
  - आरेखण (Drawing) – सेक्शन, एलिवेशन, प्लान; मृदभांड (pottery), पत्थर के औजार, शवाधान (burial), पुरावशेष (antiquity), आदि।
  - इमेजिंग (Imaging)
  - क्षेत्र प्रयोगशाला (Field laboratory)
  - अध्याय-विभाजन (Chapterization); पाठ की तैयारी; डमी और प्रूफ रीडिंग

प्रश्नपत्र 2: मानव समाज (Human Societies)

- **इकाई 1**
  - मानव विकास और होमिनिड जीवाश्म – भारत और विश्व
  - पुरापाषाणकालीन संस्कृतियां – भारत और विश्व
  - मध्यपाषाणकालीन संस्कृति – भारत और विश्व
  - शैल कला (Rock Art) – भारत और विश्व
- **इकाई 2**
  - नवपाषाण संस्कृति
  - भारत की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियां – राजस्थान, उत्तर और मध्य भारत
  - गंगा मैदान, उत्तर-पूर्व क्षेत्र और ओडिशा की ताम्रपाषाण संस्कृतियां
  - दक्कन ताम्रपाषाण (Deccan Chalcolithic)
  - दक्षिण भारत की नव-ताम्रपाषाण संस्कृतियां
- **इकाई 3**

    - हड़प्पा अध्ययन
    - प्रारंभिक हड़प्पा
    - परिपक्व हड़प्पा – प्रारंभिक से परिपक्व में संक्रमण
    - शहरीकरण (Urbanization)
- **इकाई 4**
    - उत्तर हड़प्पा – परिपक्व से उत्तर हड़प्पा में संक्रमण
    - हड़प्पा सभ्यता का पतन – सिद्धांत
    - हड़प्पा की विरासत – ओसीपी (OCP); ताम्र निधियां (Copper Hoards)
- **इकाई 5**
    - लौह प्रौद्योगिकी और बहस
    - गंगा मैदान की लौह युगीन संस्कृतियां
    - दक्कन की महापाषाण (Megalithic) संस्कृतियां
    - दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृतियां

प्रश्नपत्र 3: ऐतिहासिक पुरातत्व (Historical Archaeology)

- **इकाई 1**
    - ऐतिहासिक भूगोल
    - पुरातत्व और पाठ: स्वदेशी और विदेशी
    - महाकाव्य और पुरातात्विक परंपरा
    - स्रोत: अभिलेखीय (Epigraphic); मुद्राशास्त्रीय (Numismatics)
    - शहरीकरण
- **इकाई 2**
    - 'प्रारंभिक ऐतिहासिक' को परिभाषित करना – सिद्धांत और बहस (छठी शताब्दी ईसा पूर्व - सामान्य युग/ईस्वी की शुरुआत)
    - स्थलों की प्रकृति और सर्वेक्षण
    - भौतिक संस्कृति
    - व्यापार नेटवर्क – स्थल और समुद्र (इंडो-रोमन व्यापार के विशेष संदर्भ में)
- **इकाई 3**
    - ऐतिहासिक पुरातत्व (सामान्य युग की शुरुआत – 5वीं शताब्दी ईस्वी)
    - स्थलों की प्रकृति और सर्वेक्षण
    - भौतिक संस्कृति
- **इकाई 4**

- पूर्व मध्यकालीन पुरातत्व (6ठी शताब्दी – 12वीं शताब्दी ईस्वी)
- 'पूर्व मध्यकालीन' को परिभाषित करना – सिद्धांत और बहस
- स्थलों की प्रकृति और सर्वेक्षण
- बौद्ध मठवासी प्रतिष्ठान
- व्यापार नेटवर्क – स्थल और समुद्र

- **इकाई 5**
  - मध्यकालीन (13वीं शताब्दी – 17वीं शताब्दी ईस्वी) और औपनिवेशिक काल (18वीं शताब्दी – 19वीं शताब्दी ईस्वी) का पुरातत्व
  - प्रमुख मध्यकालीन और औपनिवेशिक शहर/बस्तियां

प्रश्नपत्र 4: कानून और कन्वेंशन (Laws and Conventions)

- **इकाई 1: इतिहास लेखन (Historiography)**
  - भारत में पुरावशेष संबंधी कानूनों का इतिहास
  - भारतीय निधि गड़ंत अधिनियम (Indian Treasure Trove Act), 1878
  - प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904
  - पुरावशेष (निर्यात नियंत्रण) अधिनियम, 1947
  - भारत का संविधान
  - राज्य विधान
- **इकाई 2: राष्ट्रीय विधान – चल सांस्कृतिक संपत्ति**
  - पुरावशेष और कला बहुमूल्य वस्तु अधिनियम, 1972 और नियम 1973
  - नीतियां, दिशानिर्देश, मानक संचालन प्रक्रिया (SoP) और सिफारिशें
  - केस स्टडी
- **इकाई 3: राष्ट्रीय विधान – अचल सांस्कृतिक संपत्ति**
  - प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 और नियम 1959
  - नीतियां, दिशानिर्देश, मानक संचालन प्रक्रिया (SoP) और सिफारिशें
  - केस स्टडी
  - राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) – हेरिटेज उप-नियम; केस स्टडी
- **इकाई 4: चल सांस्कृतिक संपत्ति पर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन**
  - हेग कन्वेंशन (The Hague Convention)
  - सांस्कृतिक संपत्ति के अवैध आयात, निर्यात और स्वामित्व के हस्तांतरण को प्रतिबंधित करने और रोकने के उपायों पर कन्वेंशन, 1970
  - चल सांस्कृतिक संपत्ति के संरक्षण के लिए सिफारिश, 1978

    - चोरी या अवैध रूप से निर्यात की गई सांस्कृतिक वस्तुओं पर कन्वेंशन, 1995
    - पुरावशेषों की पुनर्प्राप्ति – प्रक्रिया और केस स्टडी
    - नीतियां, दिशानिर्देश, SoP और सिफारिशें
- **इकाई 5: अचल सांस्कृतिक संपत्ति पर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन**
    - पुरातात्विक उत्खनन पर लागू अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांतों पर सिफारिश, 1956
    - स्मारकों और स्थलों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए अंतर्राष्ट्रीय चार्टर, 1964
    - विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित कन्वेंशन, 1972
    - बुर्रा चार्टर (The Burra Charter), 1979
    - ऐतिहासिक उद्यानों पर फ्लोरेंस चार्टर, 1981
    - पुरातात्विक विरासत के संरक्षण और प्रबंधन के लिए चार्टर, 1990
    - प्रामाणिकता पर नारा दस्तावेज़ (Nara Document on Authenticity), 1994
    - स्मारकों, भवनों के समूहों और स्थलों की रिकॉर्डिंग के लिए सिद्धांत, 1996
    - निर्मित स्थानीय विरासत पर चार्टर, 1999
    - जलमग्न सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर कन्वेंशन, 2001

प्रश्नपत्र 5: अन्वेषण और उत्खनन में प्रशिक्षण (Training in Exploration and Excavation)

- प्रागइतिहास – भूविज्ञान; चट्टानें और पत्थर; उपकरण गढ़ना (Tool knapping); उपकरण आरेखण; रिपोर्ट।
- अन्वेषण – अन्वेषण-पूर्व कार्य, मानचित्र पठन, अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग और दस्तावेज़ीकरण।
- उत्खनन – सर्वेक्षण; स्थल योजना, खाइयों का लेआउट, साइट नोटबुक; कलाकृतियों का 2D और 3D-रिकॉर्डिंग, पॉटरी यार्ड, कलाकृतियों का दस्तावेज़ीकरण; आरेखण – सेक्शन, प्लान, मृदभांड, शवाधान, पुरावशेष, आदि; फोटोग्राफी।

प्रश्नपत्र 6: कला, मूर्तिशास्त्र और वास्तुकला (Art, Iconography and Architecture)

(इकाई 1: कला; इकाई 2: मूर्तिशास्त्र; इकाई 3, 4 और 5: वास्तुकला)

- **इकाई 1**
    - प्रागैतिहासिक भारत में कला
    - टेराकोटा – आद्य-ऐतिहासिक/हड़प्पा; ऐतिहासिक काल

    - मूर्तिकला कला और शैली/संप्रदाय (Schools)
    - धातु
    - चित्रकला – भित्ति (Mural) और लघुचित्र (Miniature)
- **इकाई 2**
    - स्रोत – ग्रंथ; शब्दावली
    - ब्राह्मणवादी (Brahmanical)
    - बौद्ध
    - जैन
    - दस्तावेज़ीकरण
- **इकाई 3**
    - स्तूप वास्तुकला का विकास
    - शैलकृत (Rock-cut) वास्तुकला
    - चैत्य और विहार
    - मठ
- **इकाई 4**
    - ग्रंथ
    - मंदिर वास्तुकला का विकास
    - नागर शैली
    - द्रविड़ शैली
    - वेसर शैली
    - दस्तावेज़ीकरण
- **इकाई 5**
    - भारत-इस्लामी वास्तुकला के तत्व
    - दिल्ली सल्तनत; मुगल; प्रांतीय शैलियां
    - मस्जिदें, मकबरे
    - किले, महल, उद्यान
    - औपनिवेशिक वास्तुकला के तत्व

प्रश्नपत्र 7: पुरालेखशास्त्र और मुद्राशास्त्र (Epigraphy and Numismatics)

(इकाई 1 और 2: पुरालेखशास्त्र; इकाई 3, 4 और 5: मुद्राशास्त्र)

- **इकाई 1**

    - भारत में लेखन की प्राचीनता
    - हड़प्पा लिपि
    - भारतीय लिपियां – उत्पत्ति, विकास, वाचन (decipherment), वितरण।
    - अरबी-फ़ारसी शिलालेख – लिपि, संवत/कालक्रम, काल-सूचक शब्द (chronograms), अंक
    - भाषा; संवत; तिथियां; अंक; प्रतीक; चिन्ह
- **इकाई 2**
    - स्रोत सामग्री के रूप में शिलालेख
    - अशोक के शिलालेख (रॉक और पिलर एडिक्ट्स)
    - चयनात्मक शिलालेख – उत्तर और दक्षिण (प्रशस्ति; प्रशासनिक; ताम्रपत्र अनुदान)
    - पुरालेखीय अभिलेखों के माध्यम से स्थल – बराबर-नागार्जुनी गुफाएं; सांची; कनगनहल्ली; नालंदा
    - पुरालेखीय अभिलेखों का दस्तावेज़ीकरण; लिप्यंतरण (Transliteration); अनुवाद।
- **इकाई 3**
    - स्रोत सामग्री के रूप में सिक्के
    - भारत में मौद्रिक प्रणाली की उत्पत्ति और प्राचीनता
    - प्राप्ति स्थान – सिक्का निधियां (Coin hoards); उत्खनन
    - सिक्के ढालने की तकनीक
    - दस्तावेज़ीकरण और सूचीकरण (Cataloguing); मोनोग्राम और प्रतीक
- **इकाई 4**
    - आहत सिक्के (Punch marked coins)
    - ढलवां तांबे के सिक्के (Cast copper coins)
    - विदेशी सिक्के – इंडो-ग्रीक; शक
    - सातवाहन
    - कुषाण
    - गुप्त
- **इकाई 5**
    - हूण; इंडो-ससानी
    - चोल; राजपूत; विजयनगर
    - दिल्ली सल्तनत; मुगल
    - कश्मीर; अहोम

प्रश्नपत्र 8: संरक्षण और विरासत प्रबंधन (Conservation and Heritage Management)

- **इकाई 1**
  - शब्दावली
  - पुरातात्विक संरक्षण का इतिहास
  - मार्गदर्शक सिद्धांत और नीतियां; मार्शल का संरक्षण मैनुअल (1923); राष्ट्रीय संरक्षण नीति (2014)
- **इकाई 2**
  - क्षरण के कारण – प्राकृतिक और मानव निर्मित
  - निरीक्षण विवरण (Inspection notes); प्राकलन (Estimation)
  - कार्यप्रणाली
  - वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचार और विश्लेषण
- **इकाई 3**
  - जैविक – क्षरण; उपचारात्मक उपाय
  - अजैविक – क्षरण; उपचारात्मक उपाय
  - भित्ति चित्र – क्षरण; उपचारात्मक उपाय
- **इकाई 4**
  - यूनेस्को और विश्व धरोहर – असाधारण सार्वभौमिक मूल्य (OUV) और इसका ढांचा
  - भारत में विश्व धरोहर सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपत्तियां
  - स्मारकों और स्थलों पर अंतर्राष्ट्रीय परिषद (ICOMOS)
  - सांस्कृतिक संपत्तियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के अध्ययन के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (ICCROM)
  - विश्व धरोहर डोजियर तैयार करना – केस स्टडी
- **इकाई 5**
  - स्थल प्रबंधन योजना
  - आगंतुक प्रबंधन
  - आपदा प्रबंधन
  - क्षमता निर्माण
  - एनएमएमए (NMMA)

प्रश्नपत्र 9: संग्रहालय विज्ञान (Museology)

- **इकाई 1**
  - संग्रहालय; संग्रहालय विज्ञान (Museology); म्यूजियोग्राफी (Museography)
  - संग्रहालयों की भूमिका
  - संग्रहालयों और संग्रहालय विज्ञान में उभरती अवधारणाएं
- **इकाई 2**
  - भारत में संग्रहालय आंदोलन
  - संग्रहालयों के प्रकार और वर्गीकरण
  - केस स्टडी – भारतीय संग्रहालय, कोलकाता; राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली; सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद; बिहार संग्रहालय, पटना; प्रधानमंत्री संग्रहालय, दिल्ली; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल
  - एएसआई (ASI) संग्रहालय
- **इकाई 3**
  - संग्रह (Collection)
  - दस्तावेज़ीकरण
  - संग्रहालय विपणन (Museum marketing)
  - सुरक्षा
- **इकाई 4**
  - प्रदर्शनी
  - शिक्षा
  - अनुसंधान
  - आउटरीच (प्रसार)
- **इकाई 5**
  - निवारक संरक्षण (Preventive Conservation)
  - क्षरण और संरक्षण
  - आपदा तैयारी
  - ICOM, ICCROM, UNESCO-ICOM म्यूज़ियम इंफॉर्मेशन सेंटर, IUCN, ICOMOS, MAI
  - ICOM आचार संहिता (Code of Ethics)

प्रश्नपत्र 10: शोध प्रबंध (Dissertation)

छात्रों को शैक्षणिक सत्र के अंत में 18,000-20,000 शब्दों का एक शोध प्रबंध प्रस्तुत करना होगा। वे अपना विषय और पर्यवेक्षक चुन सकते हैं। उन्हें इसकी एक रूपरेखा (synopsis) प्रस्तुत करनी होगी और एक प्रस्तुति देनी होगी। चुने गए विषय को प्रस्तुति के बाद संस्थान के निदेशक द्वारा अनुमोदित किया जाएगा। तीन चरणों में 27 दिनों की अवधि दी जाएगी:

- अप्रैल/मई 2027 में 09 दिन
- अगस्त 2027 में 11 दिन
- दिसंबर 2027 में 07 दिन

प्रश्नपत्र 11: मौखिक परीक्षा (Viva voce)

100 अंकों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय त्रैमासिक परीक्षा के दौरान आयोजित होने वाले वाइवा-वोस (मौखिक परीक्षा) के लिए 30 अंक, 30 अंक और 40 अंक के रूप में विभाजित किया जाएगा।

पुरातात्विक स्नातकोत्तर डिप्लोमा का प्रदान किया जाना (Award of Post-Graduate Diploma in Archaeology)

डिप्लोमा के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए, छात्र को कुल 50% अंकों के साथ प्रत्येक विषय में न्यूनतम 40% अंक प्राप्त करना आवश्यक है। 75% और उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को 'क्रेडिट' के साथ पुरातात्विक स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा। शैक्षणिक वर्ष में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र को प्रो. बी.बी. लाल की स्मृति में गठित गुरुदेव रानाडे पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंकों का होगा। सैद्धांतिक पत्रों का मूल्यांकन शैक्षणिक वर्ष के अंत की परीक्षाओं के साथ-साथ परीक्षणों, असाइनमेंट, प्रस्तुतियों आदि के माध्यम से आंतरिक मूल्यांकन पर आधारित होगा जो पूरे वर्ष आयोजित किए जाएंगे। शोध प्रबंध का मूल्यांकन लिखित सामग्री के साथ-साथ एक प्रस्तुति दोनों के आधार पर किया जाएगा।

पूर्व छात्र (Alumni)

पुरातत्व संस्थान के पास अपनी लंबी और समृद्ध विरासत के साथ पूर्व छात्रों की एक विशिष्ट सूची है, जिन्होंने पुरातत्व के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और अपने उत्कृष्ट योगदान से न केवल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण बल्कि अपने मातृ संस्थान - पुरातत्व संस्थान का नाम भी रोशन किया है। संस्थान के कई पूर्व छात्रों ने भारत और विदेश दोनों में अनुशासन की सेवा में शिक्षा जगत के क्षेत्र में अपना नाम बनाया है।

संपर्क जानकारी (Contact Information)

- ईमेल: admissions.pduia@gmail.com
- फोन: 0120-2233100

स्थान (Location)

पुरातत्व संस्थान, नॉलेज पार्क II, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में विशाल पंडित दीनदयाल उपाध्याय परिसर के भीतर स्थित है। ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर जिले में एक आगामी नियोजित शहर है। यह शैक्षणिक संस्थानों का एक केंद्र है जो मुख्य रूप से देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले युवा वर्ग की जरूरतों को पूरा करता है।